

भारत सरकार  
आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय  
लोक सभा  
अतारांकित प्रश्न सं. 1696  
05 दिसंबर, 2024 को उत्तर दिए जाने के लिए  
चेन्नई मेट्रो रेल परियोजना

†1696. श्री कार्ती पी. चिदम्बरमः

क्या आवासन और शहरी कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) चेन्नई मेट्रो विस्तार परियोजना की कॉरिडोर 5 और 6 जैसे नए चरणों के साथ वर्तमान स्थिति क्या है और इसके पूरा होने की अपेक्षित समय-सीमा क्या है;
- (ख) क्या सरकार तमिलनाडु के अन्य प्रमुख शहरों जैसे त्रिची, कोयंबटूर और मदुरै तक मेट्रो सेवाओं के विस्तार पर विचार कर रही हैं;
- (ग) यदि हां, तो इसके लिए क्या समय-सीमा तय की गई है; और
- (घ) सरकार द्वारा तमिलनाडु में इन मेट्रो रेल परियोजनाओं की व्यवहार्यता और पर्यावरणीय मानकों को पूरा करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं/उठाए जा रहे हैं?

उत्तर  
आवासन और शहरी कार्य राज्य मंत्री  
(श्री तोखन साहू)

(क) चेन्नई मेट्रो रेल परियोजना का दूसरा चरण, जिसकी कुल लंबाई 118.9 किलोमीटर है, जिसमें तीन गलियारे शामिल हैं, अर्थात्, (i) कॉरिडोर 3 - माधवरम से सिपकोट (45.8 किलोमीटर); (ii) कॉरिडोर 4 - लाइट हाऊस से पूनमल्ली बाईपास (26.1 किलोमीटर), और (iii) कॉरिडोर 5 - माधवरम से शौलिंगनल्लूर (47.0 किलोमीटर) को केंद्र सरकार ने 63,246 करोड़ रुपये की लागत पर मंजूरी दी है। चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड (सीएमआरएल), जो चेन्नई मेट्रो चरण-2 परियोजना के लिए कार्यान्वयन एजेंसी है, ने परियोजना की वर्तमान भौतिक प्रगति 38.64% और पूरा होने की तिथि दिसंबर 2027 बताई है।

(ख) और (ग) तमिलनाडु सरकार ने कोयंबटूर और मदुरै की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) बिना व्यापक गतिशीलता योजना (सीएमपी) और वैकल्पिक विक्षेषण रिपोर्ट (एएआर) के प्रस्तुत की है। मेट्रो रेल नीति 2017 के अनुसार, मेट्रो परियोजना के मूल्यांकन के

लिए सीएमपी और एएआर एक अनिवार्य शर्त है। त्रिची मेट्रो रेल परियोजना के लिए तमिलनाडु सरकार से कोई प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुआ है।

(घ) कार्यान्वयन एजेंसी, सीएमआरएल ने सूचित किया है कि तमिलनाडु की मेट्रो रेल परियोजनाओं में मेट्रो रेल परियोजनाओं की स्थिरता और पर्यावरण मानकों को सुनिश्चित करने के लिए उनके द्वारा निम्नलिखित कदम उठाए जा रहे हैं:

- पर्यावरणीय आकलन: जोखिमों को कम करने और वायु, जल और जैव विविधता प्रभावों का प्रबंधन करने के लिए व्यापक पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (ईआईए) और पर्यावरणीय प्रबंधन योजनाएं (ईएमपी) विकसित की जाती हैं।
- ऊर्जा दक्षता: सौर पैनल, एलईडी प्रकाश व्यवस्था और ऊर्जा-कुशल प्रणालियों को हरित-प्रमाणित भवनों के साथ एकीकृत किया गया है।
- टिकाऊ निर्माण: प्रीकास्ट प्रौद्योगिकी और पुनर्चक्रित सामग्री अपशिष्ट और कार्बन पदचिह्न को कम करती है।
- जलवायु लचीलापन: बाढ़ प्रतिरोधी इंफ्रास्ट्रक्चर, तूफानी जल निकासी प्रणालियां, और ऊंचाई वाले डिजाइन चरम मौसम के लिए अनुकूलनशीलता सुनिश्चित करते हैं।
- शोर और कंपन नियंत्रण: व्यवधानों को न्यूनतम करने के लिए, विशेष रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में, अवरोध, डैम्पर्स और लचीले रेल पैड्स लगाए जाते हैं।
- जैव विविधता संरक्षण: वृक्षों को 1:12 के अनुपात में पुनः रोपा जाता है, जिसमें देशी प्रजातियों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, तथा ग्रीन बफर्स बनाए जाते हैं।
- बहुविध एकीकरण: बसों, रेल और गैर-मोटरीकृत परिवहन के साथ निर्बाध संपर्क वाहनों से होने वाले उत्सर्जन में कमी आता है।
- जल प्रबंधन: जल के कुशल उपयोग के लिए एसटीपी, जल पुनर्चक्रण और वर्षा जल संचयन प्रणालियों को अपनाया जाता है।
- सौर पैनल पुनर्योजी ऊर्जा: इसमें मेट्रो रेल डिपो, एलिवेटेड और भूमिगत स्टेशनों सहित विभिन्न परिसरों में छत, जमीन पर लगे और पार्किंग क्षेत्र में सौर संयंत्रों की स्थापना के माध्यम से अक्षय ऊर्जा उत्पन्न करना शामिल है। सीएमआरएल के प्रयासों से न केवल कार्बन फुटप्रिंट में कमी आई है, बल्कि बहुत अधिक वित्तीय बचत भी हुई है। इस क्षेत्र में निरंतर विस्तार से सौर ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि होगी और ऊर्जा स्वतंत्रता और स्थिरता प्राप्त होगी।

\*\*\*\*\*